प्रतिलेखन संख्या 27

उपाध्यक्ष महोदय, मैं मानती हूँ कि बहुत–से जो हमारे भाई हैं उनकी ओर से

शिकायतें आई हैं और यहाँ बातचीत चलती रहती है कि हम अपने इलाके में सफाई

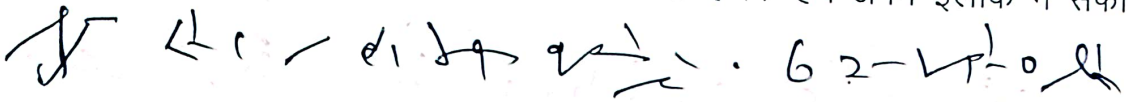

बंद कर देंगे परंतु यह विषय स्वायत्त शासन संस्था के सहयोग से नहीं हो पा रहा

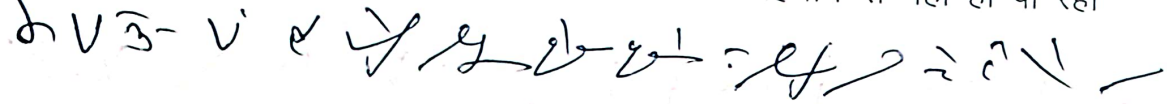

है जैसी कि हमें आशा है और मैं समझती हूँ कि राजनैतिक दल स्वास्थ्य के विषय

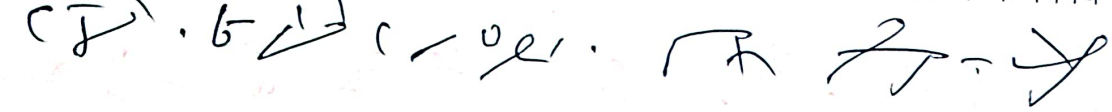

में ध्यान रखते हैं क्योंकि यह मानवता के लिए बहुत आवश्यक है और इसमें

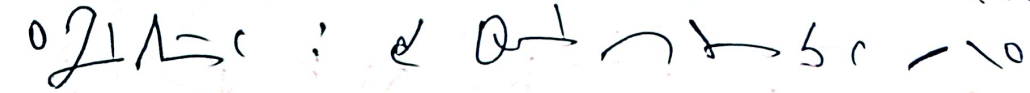

राजनीति का कोई रंग नहीं आना चाहिए, ऐसी मेरी आशा है। मैं अनुरोध करूँगी कि

सदस्यों की जो समस्याएँ हैं उनको ध्यान में रखते हुए दिल्ली प्रशासन कोई ऐसी

नीति अपनाने की कोशिश करे जिससे नगर निगम का यदि कोई काम हो तो उस

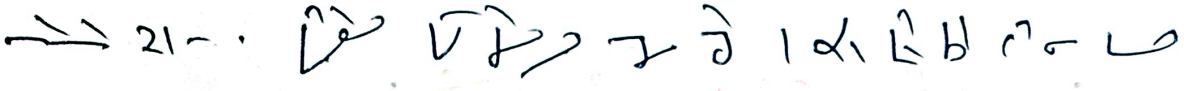

विषय में हमारा नगर निगम से एक सहयोगपूर्ण वातावरण पैदा हो मगर इस

वातावरण में राजनीति न आने पाए। हमारे सामने एक उद्देश्य हो कि हमें जनता

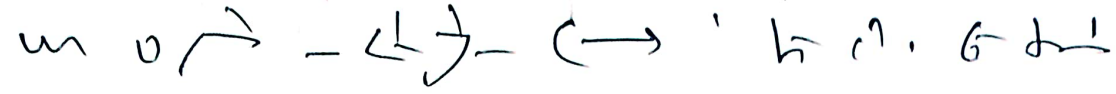

का काम करना है क्योंकि जनता के लिए हम चुनकर आए हैं। इसमें पार्टी का कोई

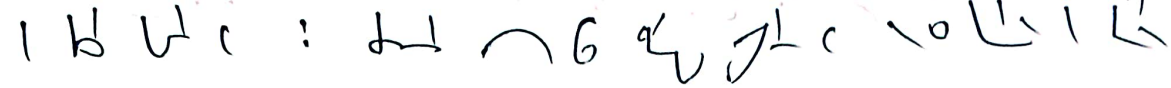

प्रश्न नहीं है।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि अनाथ बच्चों के लिए जो इस बजट में

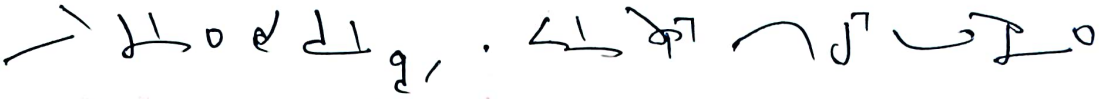

प्रावधान किया गया है कि उनके लिए केंद्र बनाए जाएँगे तो मैं समझती हूँ कि इन

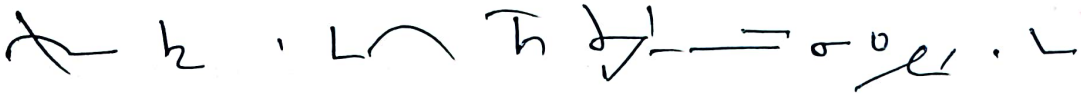

केंद्रों के साथ–साथ बेसहारा महिलाओं के लिए जो कि समाज से तिरस्कृत हैं, ऐसी

महिलाओं के लिए जगह–जगह इस प्रकार के केंद्र खुलने चाहिए जहाँ उन्हें

रोजगार सिखाया जाए और साथ ही साथ आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने की तरफ

भी प्रयत्न किया जाए। इस विषय में मेरा एक सुझाव है कि जो बच्चे अनाथ हैं, जो

बेसहारा महिलाएँ हैं उनकी तरफ हमारी पूरी कोशिश होनी चाहिए कि जो अनाथ

बच्चे हैं जो समाज से तिरस्कृत हैं, जिनको अवहेलना की दृष्टि से देखा जाता है

उनके लिए केंद्र बनाए जाएँ और उन केंद्रों में वह अधिकारी रखे जाएँ जिनके

संरक्षण में वह कार्य सीखें, पढ़ें, लिखें। यदि इसमें बाहर के सदस्य हों तो वे ऐसे

होने चहिए जिनका जीवन सरकारी सेवा में ही बीता हो ऐसे योग्य लोगों से

सहायता लीजिए। यदि इसमें असामाजिक तत्व घुस गए तो फिर हमारा पैसा ऐसे

ही खर्च हो जाएगा और जो नीति हमने बनाई है वह असफल हो जाएगी जिसका

परिणाम यह होगा कि हम उस नीति को कार्य रूप में परिणत नहीं कर सकेंगे। इस

बात पर कोई मतभेद नहीं है।